अलाउद्दीन खिलजी की मंगोल नीति का वर्णन करें ?

गद्दी पर बैठते ही अलाउद्दीन खिलजी को दिल्ली के नवमुस्लिम मंगोलों के विद्रोह का सामना करना पड़ा सुल्तान ने अन्ततः क्रूरतापूर्वक मंगोलों के विद्रोह का दमन किया और परिवार सहित अनेक मंगोलों को मौत के घाट उतार दिया गया। सुल्तान की नृशंसता से आतंकित होकर मंगोल दिल्ली छोड़कर भाग खड़े हुए। दिल्ली में उनके विद्रोह को कुचलने के पश्चात सुल्तान ने अपने साम्राज्य के सीमान्त प्रदेश की सुरक्षा की ओर ध्यान दिया. सुल्तान बलबन की नीति का अनुसरण करते हुए अलाउद्दीन ने भी दुर्गों की मरम्मत करवायी और पर्याप्त संख्या में सैनिकों को रखा। उसने अपने योग्य सेनापति नुसरत खां और जफर खां को सीमा की रक्षा का भार सौंपा किन्तु इसके बावजूद अलाउद्दीन को अनेक बार मंगोलों के आक्रमण का सामना करना पड़ा 1296 ई. से 1308 ई के मध्य मंगोलों ने अनेक बार मंगोलों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। मंगोलों ने अपने नेता कादर खां, दाऊद खां, सालदी, कुतलुग ख्वाजा, तार्गी, ख्वाजा ताश और अलीबेग इकबाल मन्दा और कुबाक के नेतृत्व में अनेक आक्रमण किये किन्तु इन सभी में वे बुरी तरह से सुल्तान के सैनिकों द्वारा पराजित हुए। इन आक्रमणों में सबसे भयानक आक्रमण कुतलुग ख्वाजा का था जो पंजाब को रौंदता हुआ